संवाद

जीवन में कला का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अहम हिस्सा होना चाहिए। दृश्य कला, प्रदर्शन कला और साहित्य कला के रूप में शिक्षण अधिगम की प्रक्रियाओं में इन कलाओं का भी अहम हिस्सा है। पाठ्यक्रम में अगर कला का समावेश हो तो इससे विभिन्न विषयों को समझने में मदद मिलती है। कला-समेकित पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों की सामग्री को तार्किक, शिक्षार्थी-केंद्रित और अर्थपूर्ण तरीके से जोड़ने का साधन प्रदान कर सकता है। पत्रिका का प्रथम लेख भी 'प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा— कलात्मकता के विकास के विक्टर लॉन्फेल्ड के सिद्धांत की उपादेयता' कला को जीवन में लय प्रदान करने वाला मानता है। यह लेख कला को शिक्षा के साथ जोड़कर बच्चों को उनके समाज व संस्कृति से जोड़े रखने पर बल देता है। इस लेख के माध्यम से विक्टर लॉन्फेल्ड के सिद्धांत के द्वारा कला शिक्षा को विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है। एक ओर बच्चा जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के साथ कला को निखारता है, वहीं दूसरी ओर कला भी उसके जीवन को रचनात्मक स्वर प्रदान करती है।

पत्रिका में शामिल दूसरा लेख 'विज्ञान विषय की उपलब्धि पर स्व-मूल्यांकन की प्रभावशीलता' स्व-मूल्यांकन के महत्व और उसके सकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डालता है कि कैसे स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनी गलतियों को स्वयं पहचानने और उसे सुधारने में सहायक होती है। यह पद्धति विद्यार्थियों में स्वयं को जाँचने की प्रवृत्ति को विकसित करती है और शिक्षण में भी सहयोगी भी होती है।

यह सर्वविदित है कि शिक्षा किताबों तक सीमित नहीं हो सकती। इसका संबंध बौद्धिक ज्ञान से लेकर व्यवहार तक है। 'शांति के लिए शिक्षा एवं शांति निर्माता के रूप में शिक्षक' लेख यह बताता है कि शिक्षा के माध्यम से हम कैसे स्वयं के जीवन, परिवार, समुदाय से लेकर राष्ट्र तक में शांति ला सकते हैं। यह लेख शांति के लिए शिक्षा और उसमें शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करता है। इसके साथ ही यह शांत व सदाचारी जीवन की ओर विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त करने की प्रेरणा भी देता है।

विभिन्न विषयों के ज्ञान के साथ-साथ बच्चों में मूल्यों और योग्यताओं को विकसित करना भी शिक्षा का उद्देश्य होता है। इससे संबंधित लेख 'व्यक्तिगत और सामाजिक योग्यता का विकास' शिक्षा

को समग्रता के साथ देखते हुए अध्यापक से बच्चों में व्यक्तिगत और सामाजिक योग्यताओं (जिनमें मानवीय मूल्य सम्मिलित हैं) को विकसित करने पर ज़ोर देता है। अध्यापक स्वयं को बच्चों के समक्ष एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए इन योग्यताओं को बच्चों में खेल-खेल में विकसित कर सकते हैं।

'संख्या एवं उसके स्थानीयमान की समझ' लेख बच्चों को गणित सिखाते समय अधिक व्यावहारिक उदाहरणों और अनुभवों को अपनाने की बात कहता है। गणित का शिक्षण जितना अधिक बच्चों के परिवेश और रोज़मर्रा के अनुभवों से जुड़ा होगा, उतना ही अधिक वह बच्चों को सीखने और सिखाने में मददगार होगा। अकसर ऐसा देखने में आता है कि गणित से बच्चों को भय लगता है। लेख यह भी समझने में मदद करता है कि कौन-कौन सी गतिविधियों और पद्धतियों के माध्यम से हम बच्चों में सख्यांओं के स्थानीयमान की समझ को विकसित कर सकते हैं। गणित समझने में भाषा की भी अहम भूमिका होती है। भाषायी विविधता को बनाए रखने के लिए मातृभाषाओं का विकास आवश्यक है जिसमें शिक्षा एक बेहद ही महत्वपूर्ण साधन है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों की मातृभाषा या घर की भाषा में शिक्षण उनके सीखने व अभिव्यक्त करने के कौशल पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। पत्रिका में शामिल लेख 'बहुभाषी भारत में मातृभाषा का महत्व और उसकी शिक्षा में उपयोगिता' भारत में भाषायी विविधता को ध्यान में रखते हुए मातृभाषा के संवर्धन की बात करता है। इसी प्रकार अन्य लेख 'प्रारंभिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता का अध्ययन' हिन्दी भाषा में शुद्ध वर्तनी के प्रयोग पर प्रकाश डालता है। बच्चों के हिंदी व्याकरण को सुधारने हेतु प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं को हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता लाना बेहद आवश्यक है। भाषायी दक्षता अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों में सृजनात्मकता भाषा के प्रोत्साहन में सहायक होगी। शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करने वाला और उसके प्रति सजग शिक्षक ही विद्यार्थियों मे सही वर्तनी के प्रयोग को बढ़ावा दे सकता है।

आत्मनिर्भर भारत के सपने को सच करने में उद्यमियों की आज विशेष भूमिका है। इसी बिंदु पर प्रकाश डालते हुए पत्रिका का लेख 'प्रारंभिक विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का उद्यमशीलता के प्रति दृष्टिकोण' बताता है कि प्राथमिक शिक्षा किस तरह उद्यमिता कौशल एवं उद्यमिता आदतों के निर्माण में सहायक हो सकती है। विद्यार्थियों से लेकर शिक्षकों तक सभी को उद्यमिता कौशल के विकास में मिलकर काम करना चाहिए।

'विद्यालय प्रबंधन समिति और प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' लेख विद्यालय प्रबंधन समिति के गठन, महत्व और कार्य को बताते हुए, उसके सशक्तिकरण के सुझाव भी देता है। नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत विद्यालय प्रबंधन समिति का प्रावधान शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने का बेहद ही कारगर उपाय है।

'कविता बोध में शब्दावली और संवेदीय अनुभव' लेख कविता में सार्थक और उपयुक्त शब्दों के प्रयोग व चयन की समझ पर बल देता है। कविता में माला की तरह पिरोये गए शब्दों की सटीकता मानव मन पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रभावित करती है। यह लेख बच्चों में कविता के प्रति यही सूक्ष्म समझ विकसित करने की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

'प्राथमिक स्तर पर आँगनबाड़ी के माध्यम से विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन' लेख में लेखिका आँगनबाड़ी के महत्व को उजागर करते हुए यह बताती हैं कि आँगनबाड़ी से विद्यालय में प्रवेश लेने वाले बच्चों के सीखने के प्रतिफल सीधे विद्यालय में प्रवेश लेने वाले बच्चों से बेहतर होता है। आँगनबाड़ी बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की नींव को सुदृढ़ करने का कार्य करती है और उन्हें आगामी कक्षाओं में शिक्षा ग्रहण करने के लिए तैयार करती है।

प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत निष्ठा कार्यक्रम के मॉड्यूल एक के प्रथम अध्याय 'पाठ्यचर्या, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षणशास्त्र, सीखने के प्रतिफल और समावेशी शिक्षा' को रखा गया है ताकि पाठक इसे पढ़कर इसका लाभ प्राप्त कर सकें।

पत्रिका के संबंध में आपके विचार व सुझाव सादर आमंत्रित हैं। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक